आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2353 • उदयपुर, गुरुवार 03 जून, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

5जी मोबाइल टेस्टिंग या नेटवर्क से नहीं फैलता कोरोना

सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे 5जी मोबाइल टेस्टिंग या नेटवर्क से कोरोना फैलने के कथित मैसेज को दूरसंचार विभाग (डीओटी) ने भ्रामक बताया है।

विभाग ने राजस्थान सहित विभिन्न राज्यों में अलर्ट जारी कर कहा है कि 5जी से कोरोना संक्रमण का फैलाव को कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। राजस्थान में 5जी नेटवर्क कनेक्विटी अभी नहीं है। डीओटी से लोगों को अपने घर के नजदीक मोबाइल टावर रेडिएशन की स्थिति जानने के लिए विकल्प दिया है।

डब्ल्यूएचओ ने यह कहा : विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) का वह मैसेज भी दूरसंचार विभाग वायरल कर रहा है। जिसमें कहा गया है कि 5जी टेस्टिंग और कोरोना वायरस के बीच कोई संबंध नहीं है। वायरस किसी भी रेडियो तरंगो, मोबाइल नेटवर्क के जरिए नहीं फैल सकता। कोरोना उन देशों में भी फैला है, जहां न तो 5जी मोबाइल नेटवर्क है और न टेस्टिंग चल रही है।

टेस्टिंग करानी है तो 4 हजार लगेंगे

संबंधित टावर पर रेडिएशन की जांच उपभोक्ता स्वयं कराना चाहे तो डीओटी 4000 रूपए शुल्क लेगा। राज्य में कहीं भी यह जांच कराई जा सकेगी। इसके लिए जयपुर से डीओटी की टीम पहुंचेगी।

राज्य में यह स्थिति

- 35,000 मोबाइल टावर।
- 1.20 लाख बेस ट्रांसीवर स्टेशन (बीटीएस) लगे हैं इन टावर।
- 45,000 बीटीएस की जांच की अप्रेल तक डीओटी ने।
- 225 बीटीएस पर रेडिएशन जांच की अप्रेल में डीओटी द्वारा की गई जांच।

मंगल पर नमक के सबूत, जीवन की खोज में अहम

लाल ग्रह से पृथ्वी पर लाए नमूनो की जांच के बाद नासा ने कहा कि मंगल की सतह पर ऑर्गेनिक साल्ट(जैविक लवण) हो सकता है। नासा की इस खोज के बाद मंगल की सतह के बारे में हमारी समझ और विकसित होगी। साथ ही इससे मंगल व अन्य ग्रहों पर सूक्ष्म जीवों की खोज करने में भी मदद मिलेगी। नासा ने एक बयान में कहा कि मंगल पर आर्गेनिक कंपाउंड और नमक भौगोलिक प्रक्रिया या जीवाणुओं के निशान हो सकते है। जैसे कि पहले क्यूरियोसिटी रोवर ने पता लगाया था।

भूगर्भिक प्रक्रिया से बने हो सकते हैं लवण

एक रिसर्च जर्नल में प्रकाशित शोध में कहा गया है कि रेडिसन और ऑक्सिडेशन से प्रभावित आयरन, कैल्शियम मैग्नीशियम ऑग्जलेट और एसीटेट एक साथ मिलकर मंगल की सतह पर ऑर्गेनिक साल्ट में घुल सकते है। ये लवण भूगर्भिक प्रक्रियाओं के जरिए बने हो सकते है या सूक्ष्म जीव के अवशेष हो सकते है।

लाल ग्रह पर जगी संभावना

नासा के मुताबिक नमक मिलने से पहले कभी ऑर्गेनिक मैटर होने की संभावना को बल मिलता है। धरती पर ऐसा जीवन देखा गया है जो ऑर्गेनिक साल्ट, ऑग्जलेट व एसीटेट पर निर्भर होता है। ऑर्गेनिक मॉलिक्यूल मिलना अहम है, पर चुनौतीपूर्ण भी है। मंगल की सतह पर रेडिएशन से ऑर्गेनिक मैटर खत्म भी हो सकता है।

सेवा–जगत्
निःस्वार्थ सेवा- नारायण सेवा संस्थान

प्रतिदिन हजारों संक्रमितों तक पहुंच रही संस्थान

नारायण सेवा संस्थान ने कोरोना विपदा की दूसरी लहर में कोरोना प्रभावितों के लिए 17 अप्रैल से सेवा के कई प्रकल्प शुरू किए है। रोज हजारों संक्रमितों और परिजनों के लिए संस्थान की सेवाएं बहुत ही कल्याणकारी सिद्ध हो रही है।

संस्थान अध्यक्ष सेवक प्रशान्त भैया ने बताया कि पूज्य गुरुदेव कैलाश मानव जी व गुरूमाता कमला देवी जी के सानिध्य में कोरोना महामारी में परेशान और हताश बीमारों के सेवार्थ मुहिम चलाने का निर्णय किया। जिसमें घर–घर भोजन, कोरोना दवाई किट, एम्बुलेस और ऑक्सीजन की निःशुल्क सेवाएं 17 अप्रैल से शुरू की। जो आज उदयपुर के अलावा मेरठ (यूपी) और परभणी (महाराष्ट्र) में भी संचालित है।

इस सेवा में संस्थान की लगभग 80 सदस्य टीम जुटी है। हेल्पलाइन नम्बर पर सूचना मिलते ही टीम मेम्बर बीमार की सेवा में दौड़े चले जाते है। उन्होंने कहा कि यह सेवा संस्थान निरन्तर जारी रखेगा। बेरोजगार और मजदूरों भाइयों के लिए राशन सामग्री की सेवा भी निरन्तर जारी है।

मेरठ और परभणी में भी घर-घर भोजन सेवा

भोजन पैकेट बनाने में जुटी सेवाभावी साधक टीम

कोरोना संक्रमित परिवारों के सेवार्थ नारायण सेवा संस्थान के मुख्यालय पर शुरू हुई घर–घर भोजन सेवा की तर्ज संस्थान की शाखा मेरठ (यू.पी.) और परभणी (महाराष्ट्र) में भी निःशुल्क भोजन सेवा 25 अप्रैल से शुरू हुई है।

शाखा परभणी की संयोजिका मंजु दर्डा के नेतृत्व में 1800 से अधिक पैकेट तथा मेरठ में मूलशंकर मेनारिया के सहयोग से 900 से ज्यादा भोजन पैकेट वितरित किए जा चुके है। अन्य शाखाओं में भी भोजन, राशन एवं दवाइयां आदि की निःशुल्क सेवा शुरू की जायेगी। यह सेवाएं कोरोना की दूसरी लहर की समाप्ति तक निरन्तर रहेगी पीड़ित मानवता को बचाना संस्थान का सर्वोपरि धर्म है।

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

कोरोना संक्रमितों के सेवार्थ नि:शुल्क सेवाएं

ऑक्सीजन सिलेंडर सेवा

अब तक नि:शुल्क 213 ऑक्सीजन सिलेण्डर दिये

'घर – घर भोजन' सेवा

अब तक घर–घर नि:शुल्क 41,044 भोजन पैकेट वितरित

कोविड पॉजिटिव बीमारों को कोरोना किट सेवा

अब तक नि:शुल्क 2116 कोरोना किट संक्रमितों को दिये

बीमार को एम्बुलेंस सेवा

बीमार को हॉस्पीटल पहुँचाते संस्थान कर्मी अब तक 238 जन लाभान्वित

हैड्रोलिक बेड सेवा

110 जन को हैड्रोलिक बेड कराये उपलब्ध

कोरोना प्रभावित 29,848 मजदूर परिवारों को राशन वितरण

अपनी जुबानी

संस्थान की कोरोना सेवाओं से लाभान्वितों के अनुभव

मैं और मेरे परिवार के अन्य सदस्य माता–पिता, पत्नी और दोनों बहने कोरोना पॉजिटिव हो गए। हमनें डॉक्टर्स की सलाह पर होम आइसोलेट रहने का फैसला लिया। लेकिन हम सभी संक्रमितों के सामने दोनों समय के भोजन की समस्या थी। हमारा खाना कौन बनाएं? तभी हमें नारायण सेवा के घर–घर भोजन सेवा की जानकारी मिली।

संस्थान की हेल्पलाइन नम्बर पर कॉल किया। हमें 6 पैकेट भोजन भेजना शुरूकर दिया। वास्तव में खाना– बहुत स्वादिष्ट था। अच्छे से पैकिंग में सुरक्षित पैकेट 15 दिन तक निरन्तर मिलता रहा स्वादिष्ट भोजन। अब हमारा पूरा परिवार पूर्ण स्वस्थ हो गया। इस सेवा के लिए संस्थान का बहुत आभार।

– अंकित माथुर, उदयपुर

मैं और मेरी पत्नी व बेटे को बुखार आने लगा। कोरोना टेस्ट करवाया। हमारी रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आ गई। तभी हम सब घर में आइसोलेंट हो गए। हम तीनों बीमार दवाई और भोजन के लिए चिंन्तित थे। तभी मेरे मित्र ने मुझे नारायण सेवा संस्थान की कोरोना किट और घर–घर भोजन सेवा से अवगत कराया। मैंनें दूरभाष से सम्पर्क किया। हमें कोरोना दवाई किट और भोजन पैकेट सुविधा शुरू हो गई। 14 दिनों तक संस्थान से कार्यकर्त्ताओं की सेवाएं मिली। सुपाचय और रूचिकर भोजन के साथ कोरोना मेडीसन खाकर कोरोना संक्रमण से उबर गए। हम सभी अब पूर्ण स्वस्थ्य है। संस्थान की दिल से धन्यवाद।

– रानू राजपूत, उदयपुर

सम्पादकीय

सृष्टि के प्रारंभ से लेकर अब तक मानव जीवन पर अनेक प्रकार के संकट आते रहे हैं। समय–समय पर मनुष्य की सूझबूझ के कारण उन कष्टों का निवारण भी होता रहा है। कहते हैं कि कोई भी समस्या ऐसी नहीं है कि जिसका समाधान न हो। प्रयास किया जाए तो समस्या का निराकरण देरसवेर होता ही है। वर्तमान समय में मनुष्य एक भीषण महामारी से जूझ रहा है। इस महामारी को समझने में, इसके निदान में, इससे बचने के उपायों में समय लगना स्वाभाविक था। आज हमारे पास इससे बचने एवं लड़ने के लिए अनेक प्रकार के साधन विकसित हो चुके हैं। ऐसी स्थिति में हमारा भय दूर हो एवं शांत चित्त होकर इसका मुकाबला करके इसे हरा सकें, तभी सफलता का एक और अध्याय मानव इतिहास में लिखा जाएगा।

क्योंकि यह बीमारी शरीर से जुड़ी हुई है इसलिए शरीर विज्ञानियों का मत एवं अनुभव इसमें महत्वपूर्ण है। उनके अनुसार शारीरिक दूरी, मास्क का प्रयोग, निर्जमीकरण करते रहना बचाव के उपाय हैं। प्रसन्नता की बात है कि अब तो इसके विरुद्ध दवा का भी आविष्कार हो चुका है। इसलिए इस महामारी का अंत निकट ही है। किंतु इन साधनों के साथ–साथ मन की .ढ़ता एवं सकारात्मकता बहुत आवश्यक है। सौभाग्य की बात है कि यह सब बातें हमारे बस में हैं। केवल अपने को अपनी मानसिकता बनानी है।

कुछ काव्यमय

दीखने लगा है जल्द ही,
मानव त्रासद का अंत ।
दु:ख की बदली छंटते ही,
खुशियां फैलेगी दिग्दिगंत।
बस थोड़ा संयम और ,
कर ले रे मानव धारण।
सब मिल करें उपाय,
दूर हो रोग – प्रसारण।।

- वरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में निहित है दिव्यांगजनों की प्रगति की कुंजी

– प्रशान्त अग्रवाल

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस डेटा साइंस का एक ऐसा क्षेत्र है, जिसने हाल के वर्षों में सभी कारोबारों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एआई या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक डेटा साइंस फंक्शन है जो कंप्यूटर को अनुभवों के माध्यम से सीखने और अपने स्वयं के स्तर पर ऐसे कार्य करने के लिए प्रशिक्षित करता है, जिन्हें कुछ इनपुट्स के साथ बेहतर तरीके से किया जा सकता है। ग्राहकों से संपर्क में सहायता के लिए उपयोग किए जाने वाले चौटबॉट्स से लेकर अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तक एक लंबा सफर तय किया गया है और कहा जा सकता है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक ऐसे शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरा है, जिसने पूरी दुनिया में कारोबार करने के तौर–तरीकों को बदल दिया है और इसीलिए आज पारस्परिक संपर्क के लिए दुनियाभर के व्यवसायों और सेवाओं में इसका इस्तेमाल किया जाता है। दरअसल एआई एक उपकरण है जो एआई पेशेवरों द्वारा फीड किए गए डेटा के माध्यम से विशिष्ट कार्यों को करने के लिए डेटा पैटर्न को पहचानता है। हाल के दिनों में जहां नई टैक्नोलॉजी बहुत कम समय में उन्नत हो रही हैं, वहीं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की अवधारणा का उपयोग विभिन्न कॉरपोरेट्स द्वारा ऐसी सहायक तकनीकों के निर्माण के लिए किया गया है, जो कि दिव्यांग जनों के लिए उपयोगी साबित हो सकती हैं।

एआई को अपनाने से अर्थव्यवस्थाओं में सीधे तौर पर व्यापक परिवर्तन नजर आ रहा है, साथ ही क्षमताओं का निर्माण करने के लिए भी एआई का उपयोग किया गया है। गार्टनर द्वारा हाल ही में जारी किए गए अध्ययन के अनुसार यह भविष्यवाणी की गई है कि वर्तमान में प्रबंधकों द्वारा किया जा रहा 69 प्रतिशत कार्य 2024 तक पूरी तरह से स्वचालित हो जाएगा। भारत सरकार को भी समावेशी विकास के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) में भरपूर संभावनाएं नजर आ रही हैं। यही कारण है कि सरकार ने एआई पर एक टास्क फोर्स की स्थापना की है और नीति आयोग को निर्देश दिए हैं कि वह एआई को लेकर एक राष्ट्रीय रणनीति तैयार करे। देश अपनी 4.0 औद्योगिक क्रांति में अपने एआई समाधानों के माध्यम से प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्रदान करना चाहता है जो अतिरिक्त लागत लाभ के साथ उत्पादकता बढ़ा सकते हैं। इस तरह व्यवसायों को श्रम की तुलना में थोड़ा अधिक लागत उत्पादक और लाभदायक बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इस प्रकार हमारा देश क्षमताओं का निर्माण करके डिजिटल दुनिया में व्याप्त वैश्विक विभाजन को कम करने की पूरी कोशिश कर रहा है। नीति आयोग द्वारा प्रकाशित एक हालिया लेख के अनुसार भारत का शिक्षा जगत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तकनीक को अपनाने के लिए पूरी तरह तैयार है। लेख में कहा गया है कि वर्ष 2030 तक दुनिया में सबसे अधिक युवा लोग हमारे देश में होंगे। इस दौर में एआई का उपयोग दिव्यांग लोगों के लिए भी फायदेमंद साबित हुआ है, क्योंकि अधिक से अधिक संगठन एआई को अपना रहे हैं और वे दिव्यांग लोगों को भर्ती करने के लिए तत्पर हैं, जो उन्हें परिवर्तनों के लिए अधिक अनुकूल बनाते हैं। एक तरह से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कार्यस्थलों पर विविधता को बढ़ावा देता रहा है। गार्टनर की रिपोर्ट बताती है कि संगठनों से जुड़े 75 प्रतिशत प्रमुखों को कुशल प्रतिभा की कमी का सामना करना पड़ रहा है। चूंकि प्रतिभाशाली दिव्यांग जनों की प्रतिभा का अभी पूरी तरह इस्तेमाल नहीं हो पाया है, ऐसे में अधिकांश संगठन अब एआई के साथ खुद को लैस कर रहे हैं ताकि इन दिव्यांग उम्मीदवारों को स्किलिंग और प्रशिक्षण प्रदान करके उन्हें और भी अधिक सक्षम बनाया जा सके और उनकी प्रतिभा का उपयोग हो सके। इस तरह कार्यस्थल में भी विविधता नजर आने लगी है, जहां अब बड़े संगठनों द्वारा भी दिव्यांग जनों को स्वीकार किया जाने लगा है।

गार्टनर की रिपोर्ट में आगे विस्तार से बताया गया है कि 2023 तक नौकरी करने वाले दिव्यांग जनों की संख्या आज की तुलना में तीन गुना हो जाएगी, क्योंकि एआई की सहायता से कार्यस्थल की बाधाओं को कम किया जा सकेगा। गार्टनर का अनुमान है कि दिव्यांग लोगों को सक्रिय रूप से नियुक्त करने वाले संगठनों में कर्मचारियों के कायम रहने की दर 89 प्रतिशत रही है और इसके साथ ही कर्मचारी उत्पादकता में 72 प्रतिशत और संगठन की लाभप्रदता में 29 फीसदी की वृद्धि हुई है।

एआई ने दिव्यांग जनों के लिए कई विकल्प खोले हैं, जिससे उनके लिए कार्यस्थल में अधिक समावेशिता को जोड़ा जा सका है। दिव्यांग लोगों के लिए हाल के दौर में सामने आए कुछ और दिलचस्प विकल्पों में एक विकल्प है रेस्तरां का कारोबार, जहां वर्चुअल रियलिटी और ब्रेल को लागू करते हुए दिव्यांगों के लिए नए अवसरों का सृजन किया गया है। कई संगठनों ने अपने यहां सक्रिय रूप से एआई रोबोटिक्स टैक्नोलॉजी को लागू किया है, जिसमें दिव्यांग जनों द्वारा रोबोटिक्स को नियंत्रित किया जाता है और वे ही उसका रख–रखाव भी करते हैं।

इधर जबकि एआई के माध्यम से दिव्यांग जनों के लिए नए विकल्पों को विकसित किया जा रहा है, दूसरी तरफ एक्सेंचर की 'रीवायर फॉर ग्रोथ' शीर्षक वाली रिपोर्ट में कहा गया है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से वर्ष 2035 तक देश की अर्थव्यवस्था में लगभग 957 बिलियन डॉलर जोड़ने की क्षमता है। समग्र रूप में एआई में वह क्षमता है जो मशीन लर्निंग के साथ इन्फ्रास्ट्रक्चरल ग्रोथ के माध्यम से अनेक कारोबारों के लिए फायदेमंद साबित हो सकती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डीप लर्निंग नेत्र विज्ञान के क्षेत्र में भी फायदेमंद साबित होगी। यह टैक्नीक स्क्रीनडायबेटिक रेटिनोपैथी (डीआर) और रेटिनोपैथी ऑफ प्रीमैच्योरिटी (आरओपी) के लिए भी फायदेमंद होगी।

एआई ने कैरियर के अनेक ऐसे नए विकल्पों को खोलने में भी मदद की है, जहां सहायक तकनीक जैसे रीयल टाइम टैक्स्ट टू स्पीच और टैक्स्ट ट्रांसलेशन सिस्टम का उपयोग शिक्षकों द्वारा अपने छात्रों को प्रशिक्षित करने के लिए किया जाता है। इनका उपयोग क्षेषीय भाषाओं में मूल रूप से सूचना का प्रसार करने के लिए किया गया है जो वास्तव में दिव्यांग जनों के कौशल के लिए बनाए गए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के ड्राट के अनुरूप है।

एआई तकनीक में एक और विकास बायोमेट्रिक ऑथेंटिकेशन से संबंधित है, जिसका उपयोग छात्रों और शिक्षकों दोनों की उपस्थिति को दर्ज करने के लिए किया जाता है। इस तरह यह तकनीक कर्मचारियों की उपस्थिति और अन्य प्रशासनिक कार्यों को रिकॉर्ड करने के लिए फायदेमंद साबित हुई है। बॉयोमीट्रिक अटेंडेंस शिक्षकों और युवाओं दोनों की उपस्थिति के अनुपात को चिह्नित करने के लिए भी फायदेमंद साबित हुई है और इस तकनीक के माध्यम से उच्च शिक्षा के लिए पुरुष–महिला नामांकन के अनुपात की सटीक जानकारी मिल सकती है। छात्रों की शंकाओं और उनके सवालों के जवाब देने के लिए चौटबॉट्स का उपयोग किया जा रहा है, जिन्हें दरअसल विषय विशेषज्ञों ने तैयार किया है। नीति आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग का इस्तेमाल दीक्षा, ई–पाठशाला और स्वयंम (स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एस्पायरिंग माइंड्स) जैसे प्लेटफार्मों पर बड़े पैमाने पर आकलन के स्वचालित ग्रेडिंग के लिए किया जा सकता है। इसमें सिर्फ वस्तुनिष्ठ प्रश्न ही नहीं, वर्णनात्मक सवालों को भी शामिल किया जा सकता है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि शिक्षा क्षेत्र ने एआई के इस्तेमाल के साथ ही दिव्यांग जनों के लिए अनेक नए विकल्प खोल दिए हैं। इस राह में अनेक बाधाएं भी सामने आ सकती हैं, लेकिन निश्चित रूप से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तकनीक सभी क्षेत्रों में नए अवसरों का सृजन करेगी, खास तौर पर शिक्षा के क्षेत्र में जहां दिव्यांग जनों के लिए यह तकनीक बेहद फायदेमंद साबित हो सकती है।

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

1971 की बात है कैलाश सदैव की तरह कोन लेने किशनगढ़ गया हुआ था। वहीं बड़े भाई राधेश्याम का फोन आया। कैलाश घबरा गया, भाई साहब को फोन करने की जरूरत क्यूं पड़ गई? ऐसी क्या बात हो गई, हजार तरह की आशंकाएं पल भर में उसके जेहन में आ गई। फोन फैक्ट्री में उसके नाम से पी.पी. आया था। उस वक्त वो वहां था नहीं, अब दूसरी बार वापस आने की प्रतीक्षा में ही वह फोन के पास बैठा था और विचारों की श्रृंखला में डूबता उतराता रहा था।

पुनः फोन की घंटी बजी तो विद्युत की त्वरितता से उसने फोन उठाया। उधर से राधेश्याम की उत्तेजित आवाज आई, कैलाश तेरी पोस्ट ऑफिस में नौकरी लग गई है। कैलाश को सपने में भी अन्दाज नहीं था कि इस की खुश खबरी मिलेगी, वह तो किसी अनिष्ट की आशंका में ही लगा हुआ था इसलिये इस समाचार की अहमियत समझने में उसे एक क्षण लगा मगर इसके बाद उसके हर्ष का पारावार नहीं था। वह वापस भीलवाड़ा लौटा तो उसके पांव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। सरकारी नौकरी वह भी केन्द्र की, मिलना बहुत बड़ी बात थी, एक तरह से भविष्य की अनिश्चितता का सदा सदा के लिये समाधान हो गया था। उसे ट्रेनिंग के लिये तुरन्त सहारनपुर जाना था। आने जाने का खर्चा और भत्ता सरकार देती थी। राधेश्याम ने उसे बिना विलम्ब सहारनपुर रवाना किया।

अंश-25